टैक्स, बैंकिंग और खर्च में बड़े बदलाव

1 अप्रैल से बदल गए कई जरूरी नियम,आम लोगों पर होगा असर

नई दिल्ली, 1 अप्रैल. 1 अप्रैल 2026 से नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत के साथ आम लोगों की आर्थिक जिंदगी में कई अहम बदलाव लागू हो गए हैं. नए आयकर कानून से लेकर जीएसटी, बैंकिंग, डिजिटल पेमेंट, एलपीजी कीमतों और रेलवे नियमों तक, कई फैसलों का सीधा असर जेब पर पड़ेगा.

सरकार ने टैक्स सिस्टम को सरल बनाने, पारदर्शिता बढ़ाने और डिजिटल लेनदेन को सुरक्षित करने पर जोर दिया है. जहां कुछ फैसले राहत देने वाले हैं, वहीं बढ़ती महंगाई और ईंधन कीमतों में इजाफा लोगों की चिंता बढ़ा सकता है. नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत के साथ देश में आर्थिक और वित्तीय नियमों में व्यापक बदलाव लागू हो गए हैं, जिनका असर हर वर्ग के लोगों पर पड़ेगा. सबसे बड़ा बदलाव नए आयकर अधिनियम 2025 के रूप में सामने आया है, जिसने दशकों पुराने कानून की जगह ली है. इसके तहत अब 'टैक्स ईयर' की अवधारणा लागू कर दी गई है और 12 लाख रुपये तक की आय को करमुक्त कर आम करदाताओं को राहत दी गई है. साथ ही, टैक्स फाइलिंग प्रक्रिया को सरल बनाया गया है. आईटीआर दाखिल करने की समय सीमा में भी बदलाव किया गया है, जिससे अलग-अलग श्रेणी के करदाताओं को थोड़ी अधिक स्पष्टता मिलेगी. गिफ्ट और वाउचर पर टैक्स छूट बढ़ाकर 15,000 रुपये कर दी गई है, वहीं बच्चों के शिक्षा और हॉस्टल भत्ते में वृद्धि से परिवारों को फायदा होगा.

कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर के दाम में लगभग 200 रुपये की बढ़ोतरी से होटल और रेस्टोरेंट में खाने-पीने की चीजें महंगी हो सकती हैं. प्रीमियम पेट्रोल और डीजल की कीमतों में भी इजाफा हुआ है, हालांकि सामान्य ईंधन दरें स्थिर रखी गई हैं. वित्तीय पारदर्शिता बढ़ाने के लिए पैन और आधार से जुड़े नियम सख्त किए गए हैं. बड़े लेनदेन और क्रेडिट कार्ड खर्च की जानकारी अब आयकर विभाग को दी जाएगी. एचआरए छूट के लिए भी सख्त दस्तावेजी शर्तें लागू की गई हैं. डिजिटल पेमेंट को सुरक्षित बनाने के लिए टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन अनिवार्य कर दिया गया है, जबकि एटीएम से यूपीआई निकासी भी अब फ्री ट्रांजैक्शन लिमिट में शामिल होगी.

चावल, गेहूं, चीनी के भाव गिरे, खाद्य तेलों, दालों में घट-बढ़

नई दिल्ली, 01 अप्रैल. घरेलू थोक जिंस बाजारों में बुधवार को चावल की औसत कीमत गिर गयी. चावल के साथ गेहूं और चीनी में भी नरमी देखी गयी जबकि दालों और खाद्य तेलों में उतार-चढ़ाव का रुख रहा. औसत दर्जे के चावल का औसत भाव तीन रुपये घटकर 3,865 रुपये प्रति क्विंटल रह गया. गेहूं 23 रुपये सस्ता हुआ और 2,790 रुपये प्रति क्विंटल बोला गया. आटे की कीमत भी 24 रुपये टूट गयी. दाल-दलहनों में उतार-चढ़ाव रहा. मूंग दाल औसतन 28 रुपये और उड़द दाल 26 रुपये प्रति क्विंटल सस्ती हुई. वहीं, मसूर दाल का भाव 30 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गया. तुअर दाल की कीमत सात रुपये और चना दाल की चार रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गयी.

जीएसटी कलेक्शन 2 लाख करोड़ पार

सालाना आधार पर 8.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई

भारतीय अर्थव्यवस्था में खपत और टैक्स अनुपालन मजबूत बना हुआ है

नई दिल्ली, 1 अप्रैल. मार्च 2026 में जीएसटी कलेक्शन ने मजबूत उछाल दिखाते हुए 2 लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर लिया है. सालाना आधार पर इसमें 8.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो देश की मजबूत आर्थिक गतिविधियों और बढ़ते आयात का संकेत है.

सरकार के मुताबिक, खासकर आयात से मिलने वाले जीएसटी में तेज बढ़ोतरी ने कुल संग्रह को नई ऊंचाई पर पहुंचाया है. यह आंकड़े बताते हैं कि वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था में खपत और टैक्स अनुपालन मजबूत बना हुआ है. 1 अप्रैल 2026 देश की आर्थिक मजबूती का संकेत देते हुए मार्च 2026 में सकल जीएसटी संग्रह 2 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गया है. सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, इस दौरान कुल जीएसटी कलेक्शन 2,00,064 करोड़ रुपये रहा, जो पिछले साल के 1,83,845 करोड़ रुपये के मुकाबले 8.8 प्रतिशत अधिक है.

इस वृद्धि में आयात से मिलने वाले जीएसटी का बड़ा योगदान रहा, जिसमें सालाना आधार पर 17.8 प्रतिशत की तेज बढ़ोतरी दर्ज की गई. वहीं, घरेलू लेनदेन से मिलने वाले जीएसटी में 5.9 प्रतिशत का इजाफा हुआ, जो स्थिर खपत को दर्शाता है.

पूरे वित्त वर्ष 2025-26 के आंकड़े भी उत्साहजनक रहे हैं. इस दौरान सकल जीएसटी संग्रह 22.27 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया, जो पिछले वित्त वर्ष के 20.55 लाख करोड़ रुपये से 8.3 प्रतिशत ज्यादा है. वहीं, शुद्ध जीएसटी संग्रह 19.34 लाख करोड़ रुपये रहा, जिसमें 7.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई. हालांकि, इस दौरान उपकर (सेस) संग्रह में गिरावट देखने को मिली और यह नकारात्मक स्तर (-177 करोड़ रुपये) पर पहुंच गया, जिसका कारण अधिक रिफंड और समायोजन बताया गया है.

वाणिज्यिक रसोई गैस सिलेंडर दिल्ली में 195 रुपये महंगा

नई दिल्ली, 01 अप्रैल. पश्चिम एशिया संकट के कारण आपूर्ति संबंधी बाधाओं के बीच तेल विपणन कंपनियों ने बुधवार से 19 किलोग्राम वाले वाणिज्यिक रसोई गैस सिलेंडर की कीमतों में भारी-भरकम बढ़ोतरी की घोषणा की है.

देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन से प्राप्त जानकारी के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में पहली अप्रैल से 19 किलोग्राम वाला एलपीजी सिलेंडर 2,078.50 रुपये का मिलेगा. इसकी कीमत गत 07 मार्च को बढ़ाकर 1,883 रुपये की गयी थी. इस प्रकार अब यह 195.50 रुपये यानी 10.38 प्रतिशत महंगा हो गया है. जनवरी से वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमत में यह पांचवीं बढ़ोतरी है.

इस दौरान दिल्ली में यह 498 रुपये महंगा हो चुका है. घरेलू इस्तेमाल वाले 14 किलोग्राम के रसोई गैस सिलेंडर में कोई बदलाव नहीं किया गया है. इसमें 07 मार्च को 60 रुपये की वृद्धि की गयी थी और फिलहाल दिल्ली में इसकी कीमत 913 रुपये प्रति सिलेंडर है. कोलकाता में पहली अप्रैल से वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर 218 रुपये महंगा होकर 2,208 रुपये का और मुंबई में 196 रुपये की बढ़ोतरी के साथ 2,031 रुपये का हो गया है.

चेन्नई में इसकी कीमत 203 रुपये (9.93 प्रतिशत) बढ़कर अब 2,246.50 रुपये प्रति सिलेंडर पर पहुंच गयी है.

मुंबई एयरपोर्ट पर देश की पहली इन-टर्मिनल क्विक कॉमर्स सेवा

मुंबई, 01 अप्रैल. मुंबई हवाई अड्डे के टर्मिनल-2 पर देश की पहली इन-टर्मिनल क्विक कॉमर्स डिलीवरी सेवा शुरू की गयी है. पहली बार किसी टर्मिनल के भीतर इस तरह की सेवा शुरू की गयी है. इससे यात्रियों के लिए बोर्डिंग गेट, लाउंज, फूड कोर्ट और पार्टनर आउटलेट्स सहित टर्मिनल के भीतर कहीं भी अपना ऑर्डर मंगाना आसान हो गया है. बताया गया है कि डिलीवरी का काम प्रशिक्षित ऑन-ग्राउंड कर्मचारियों द्वारा कुछ ही मिनटों में पूरा किया जाता है, जिससे यात्रियों को एक सुरक्षित और सहज अनुभव मिलता है. इस सेवा के लिए अडानी एयरपोर्ट होल्डिंग्स लिमिटेड ने क्विक कॉमर्स प्लेटफॉर्म ब्लिंकिट के साथ करार किया है.

युद्ध विराम की उम्मीद से शेयर बाजार में तेजी

1,900 अंक चढ़ा सेंसेक्स

567 अंक की बढ़त पर रहा निफ्टी

मुंबई, 01 अप्रैल. ईरान युद्ध जल्द समाप्त होने की उम्मीद में घरेलू शेयर बाजारों में बुधवार को शुरुआती कारोबार में जबरदस्त तेजी देखी गयी और बीएसई के सेंसेक्स 1,900 अंक से ज्यादा उछल गया.

सेंसेक्स 1,814.88 अंक की बढ़त के साथ 73,762.43 अंक पर खुला और कुछ ही देर में पिछले कारोबारी दिवस की तुलना में करीब 1,969 अंक ऊपर 73,916 अंक पर पहुंच गया. खबर लिखे जाते समय यह 1,648.46 अंक (2.29 प्रतिशत) की मजबूती के साथ 73,596.01 अंक पर था. अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड बुधवार रात (भारतीय समय के अनुसार गुरुवार सुबह) राष्ट्र को संबोधित करने वाले हैं. उनके हालिया बयानों से निवेशकों को उम्मीद है कि वह ईरान युद्ध जल्द समाप्त करने की घोषणा कर सकते हैं. इससे वैश्विक स्तर पर शेयर बाजारों में तेजी लौट आयी है.

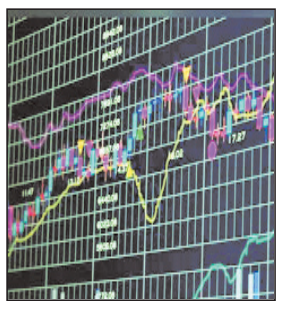

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक भी 567.60 अंक चढ़कर 22,899 अंक पर खुला. खबर लिखे जाते समय यह 505.35 अंक यानी 2.26 प्रतिशत की बढ़त में 22,836.75 अंक पर था. सभी सेक्टरों में लिवाली का जोर है. आईटी, बैंकिंग, ऑटो, वित्त, धातु, मीडिया, टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद और रसायन समूहों के सूचकांक तीन प्रतिशत से अधिक की तेजी में हैं. सेंसेक्स की भी सभी कंपनियां इस समय हरे निशान में हैं. सबसे ज्यादा मजबूती ट्रेंट, बीईएल, अडानी पोर्ट्स, इंडिगो, बजाज फाइनेंस, एलएंडटी, टीसीएस, इटरनल, महिंद्रा एंड महिंद्रा और मारुति सुजुकी के शेयरों देखी जा रही है.

अमेरिका-ईरान नरमी से तेल कीमतों में बड़ी गिरावट

नई दिल्ली, 01 मार्च. अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में बुधवार को तेज गिरावट दर्ज की गई, जिससे वैश्विक निवेशकों और आयातक देशों को राहत मिली है. तेल के दामों में यह नरमी अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव में संभावित कमी के संकेतों के बाद आई है.

ब्रेंट क्रूड फ्यूचर्स, जो दिन की शुरुआत में 105.86 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गया था, वह इंट्राडे में गिरकर 102.79 डॉलर तक आ गया. इसी तरह, यूएस वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट क्रूड भी अपने उच्च स्तर से फिसलकर करीब 101 डॉलर प्रति बैरल के आसपास कारोबार करता नजर आया. इस गिरावट का मुख्य कारण बाजार की बदलती धारणा है, जिसमें निवेशकों को उम्मीद है कि दोनों देशों के बीच टकराव जल्द कम हो सकता है. इससे तेल सप्लाई को लेकर बनी चिंता भी कुछ हद तक कम हुई है, जिसने कीमतों पर दबाव बनाया. वैश्विक कच्चा तेल बाजार में बुधवार को उतार-चढ़ाव के बाद अंततः गिरावट देखने को मिली. दिन की शुरुआत में जहां कीमतों में तेजी थी, वहीं बाद में बाजार का रुख बदल गया और दाम नीचे आ गए.

जेट फ्यूल महंगा, फिर भी नहीं बढ़ेंगे हवाई किराए

नई दिल्ली, 1 अप्रैल. जेट फ्यूल की कीमतों में बढ़ोतरी के बावजूद सरकार ने घरेलू हवाई यात्रियों को राहत दी है. अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने से एटीएफ महंगा हुआ है, लेकिन सरकार ने एयरलाइंस पर पूरा बोझ नहीं डालने का फैसला किया है.

इससे घरेलू उड़ानों के किराए फिलहाल नहीं बढ़ेंगे. इस कदम का उद्देश्य यात्रियों पर अतिरिक्त आर्थिक दबाव को कम करना और विमानन क्षेत्र को स्थिर बनाए रखना है. जेट फ्यूल (एटीएफ) की कीमतों में बढ़ोतरी के बावजूद सरकार ने घरेलू हवाई यात्रियों को बड़ी राहत दी है. पेट्रोलियम मंत्रालय के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के चलते एटीएफ की कीमतों में भारी उछाल की आशंका थी, लेकिन सरकार ने हस्तक्षेप करते हुए इस बढ़ोतरी को सीमित कर दिया है. सरकार के फैसले के तहत अब घरेलू एयरलाइंस को पूरी कीमत वृद्धि का बोझ नहीं उठाना होगा. उन्हें केवल करीब 25 प्रतिशत बढ़ोतरी, यानी लगभग 15 रुपये प्रति लीटर का अतिरिक्त भार वहन करना पड़ेगा.

इससे एयरलाइंस पर लागत का दबाव तो बढ़ेगा, लेकिन यात्रियों पर किराया बढ़ाने का असर फिलहाल नहीं पड़ेगा. वहीं, अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के मामले में एयरलाइंस को पूरी कीमत वृद्धि का सामना करना होगा, क्योंकि वहां किराए सीधे वैश्विक बाजार से जुड़े होते हैं.

विमान ईंधन की कीमत में 100 प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि

पश्चिम एशिया संकट के कारण आपूर्ति संबंधी बाधाओं के कारण तेल विपणन कंपनियों ने बुधवार से विमान ईंधन के दाम में 100 प्रतिशत से ज्यादा की बढ़ोतरी कर दी है. देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन से प्राप्त जानकारी के अनुसार, आज 01 अप्रैल से दिल्ली में विमान ईंधन 2,07,341 रुपये प्रति किलोलीटर का हो गया है. मार्च में इसकी कीमत 96,638 रुपये थी.

प्रीमियम डीजल 1.50 रुपये महंगा

नई दिल्ली, 01 अप्रैल. पश्चिम एशिया संकट के कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में तेज उछाल को देखते हुए देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन ने बुधवार को अपने प्रीमियम डीजल की कीमत में 1.50 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी कर दी. दिल्ली में इंडियन ऑयल का प्रीमियम डीजल एक्सजी आज से 92.99 रुपये प्रति लीटर का मिल रहा है. इससे पहले इसकी कीमत 91.49 रुपये प्रति लीटर थी. इस प्रकार इसमें डेढ़ रुपये की बढ़ोतरी की गयी है.

सोने-चांदी की कीमतों में आई तेजी

1.50 लाख पार हुआ सोना

2.39 लाख पर पहुंची चांदी

नई दिल्ली, 01 अप्रैल.अप्रैल 2026 को सर्राफा बाजार में सोना और चांदी की कीमतों में तेज उछाल देखने को मिला है. इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के ताजा आंकड़ों के अनुसार, 24 कैरेट सोना 2,836 रुपए महंगा होकर 10 ग्राम के लिए 1.50 लाख रुपए तक पहुंच गया है.

इससे पहले यह 1.47 लाख रुपए पर कारोबार कर रहा था. वहीं चांदी की कीमत में भी जबरदस्त तेजी दर्ज की गई है. एक किलो चांदी 9,348 रुपए बढ़कर 2.39 लाख रुपए प्रति किलो हो गई है. यह उछाल ऐसे समय में आया है जब साल 2026 में अब तक सोना और चांदी दोनों ने निवेशकों को अच्छा रिटर्न दिया है.

हालांकि, पिछले कुछ हफ्तों में अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के चलते कीमतों में उतार-चढ़ाव भी देखने को मिला है. बावजूद इसके, बाजार में फिर से तेजी लौटने के संकेत मिल रहे हैं, जिससे निवेशकों और खरीदारों दोनों की नजरें अब बुलियन मार्केट पर टिकी हुई हैं. देश के सर्राफा बाजार में बुधवार को सोना और चांदी दोनों की कीमतों में मजबूत तेजी दर्ज की गई.

समाचार विशेष

हर बच्चे को प्यार, सम्मान और अवसर मिलना चाहिए

देश में बढ़ रहे हैं ऑटिज़्म के मामले : जागरूकता और समय पर थेरेपी है समाधान!

ऑटिज़्म, जिसे ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर - एसडी) कहा जाता है, एक न्यूरोडेवलपमेंटल (मस्तिष्क विकास से जुड़ा) विकार है. यह व्यक्ति के व्यवहार, सामाजिक संपर्क, संचार (बोलचाल), और सीखने की क्षमता को प्रभावित करता है. एम्स दिल्ली की रिसर्च के अनुसार भारत में 36 में से एक बच्चे को कोविड के बाद ऑटिज़्म के लक्षण दिख रहे है, यह लड़कों में लड़ियोंओ की तुलना में दो गुना ना अधिक होता है.

ऑटिज़्म के मुख्य लक्षणः सामाजिक और संचार संबंधी कठिनाइयाँ- आँखों में आँखें न मिलाना. दूसरों से घुलने-मिलने से बचना. बातचीत में देरी या असामान्य ढंग से बोलना. किसी एक ही विषय में अधिक रुचि रखना. बर्ताव और रुचियों में दोहराव: एक ही काम को बार-बार करना (जैसे हाथ हिलाना, घूमना, ताली बजाना) किसी खास चीज (जैसे खिलौना, पंखा, रोशनी) में बहुत रुचि लेना.अचानक गुस्सा आना या बेचैनी महसूस करनासेंसरी (इंद्रियों से जुड़ी) समस्याएँ:-किसी खास आवाज़, रोशनी, गंध, या स्पर्श से असहज महसूस करना. तेज़ आवाज़ या भीड़-भाड़ वाली जगहों से बचना

ऑटिज़्म का कारण क्या है?- जेनेटिक कारण - परिवार में पहले से ऑटिज़्म का इतिहास होना.

न्यूरोलॉजिकल कारण - मस्तिष्क के कुछ हिस्सों का अलग तरह से विकसित होना. पर्यावरणीय कारण - गर्भावस्था के दौरान संक्रमण, प्रदूषण, या कुछ दवाओं का असर-आज भी ऑटिज़्म को एक कलंक माना जाता है. कुई लोग इसे भूत-प्रेत बाधा समझते हैं या मानते हैं कि बच्चे में कोई कमी है, और अक्सर इसका दोष माता पर डाल दिया जाता है. ऑटिज़्म को लेकर जागरूकता और स्वीकार्यता बेहद जरूरी है, ताकि अंधविश्वास और गलत धारणाओं को खत्म किया जा सके और ऑटिस्टिक बच्चों को सही समझ और सहयोग मिल सके.

ऑटिज़्म एक्सेप्टेंस (स्वीकार्यता) क्यों ज़रूरी है?

1. समाज में जागरूकता बढ़ाने के लिए- अभी भी कई लोग ऑटिज़्म को गलत नजरिए से देखते हैं और इसे भूत-प्रेत बाधा या मानसिक बीमारी मानते हैं. जागरूकता से इन मिथकों को दूर किया जा सकता है.

2. ऑटिस्टिक व्यक्तियों को समान अवसर देने के लिए- ऑटिज़्म से प्रभावित बच्चों और वयस्कों को शिक्षा, रोजगार और सामाजिक गतिविधियों में समान अवसर मिलना चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें.

भेदभाव और सामाजिक कलंक को खत्म करने के लिए- ऑटिस्टिक बच्चों को अक्सर अलग-थलग कर दिया जाता है या उनका मज़ाक उड़ाया जाता है. एक्सेप्टेंस से समाज उन्हें बेहतर समझ सकेगा और उन्हें अपनाएगा.

परिवारों का मनोबल बढ़ाने के लिए-जब समाज् ऑटिज़्म को स्वीकार करेगा, तो अभिभावकों को भी भावनात्मक समर्थन मिलेगा और वे बिना किसी झिझक के सही थेरेपी और संसाधनों की मदद ले पाएंगे.

कैसे बढ़ाएं ऑटिज़्म एक्सेप्टेंस?- करुणा और समझदारी के साथ पेशा आएं-ऑटिज़्म एक्सेप्टेंस सिर्फ एक दिन की मुहिम नहीं, बल्कि एक सोच है, जो समाज को ज्यादा समावेशी और संवेदनशील बना सकती है. ऑटिज़्म से जुड़े मिथक और सच्चाई- मिथः बच्चे को भूत-प्रेत बाधा है. सच्चाई, ऑटिज़्म एक न्यूरोडेवलपमेंटल विकार है, जिसका भूत-प्रेत से कोई संबंध नहीं है. यह मस्तिष्क के विकास से जुड़ी एक वैज्ञानिक स्थिति है. मिथः ऑटिस्टिक लोगों में सीखने की अक्षमता होती है. सच्चाई- हर ऑटिस्टिक व्यक्ति अलग होता है. कुछ को सीखने में कठिनाई हो सकती है, लेकिन कई में असाधारण प्रतिभाएँ भी होती हैं. मिथः ऑटिज़्म खराब पेरेंटिंग के कारण होता है. सच्चाई- यह पूरी तरह गलत है. ऑटिज़्म का कारण जेनेटिक्स और न्यूरोलॉजिकल कारक होते हैं, न कि पेरेंटिंग. मिथः टीके (वैक्सीन्स) ऑटिज़्म का कारण बनते हैं.

कांग्रेस छीन पाएगी अपना पुराना किला?

इंदिरानगर में अब क्षेत्रीय दलों का दबदबा

पुडुचेरी. बंगाल और तमिलनाडु के चुनावी शोर के बीच दक्षिण भारत का एक छोटा लेकिन बेहद खूबसूरत हिस्सा 'पुडुचेरी' भी अपनी नई सरकार चुनने की तैयारी में है.

9 अप्रैल को यहां की चर्चित इंदिरानगर विधानसभा सीट पर जनता अपने मत का प्रयोग करेगी. फ्रांसीसी वास्तुकला और समुद्री तटों के लिए मशहूर इस केंद्र-शासित प्रदेश की सियासत उतनी ही पेचीदा है, जितनी इसकी गलियां. कभी कांग्रेस का मजबूत किला रही यह सीट आज क्षेत्रीय दलों की ताकत का गवाह बन चुकी है. यहां का चुनाव केवल राजनीतिक दलों की जंग नहीं, बल्कि विकास और साख की लड़ाई है.

पुडुचेरी, जिसे कभी पोंडीचेरी के नाम से जाना जाता था, आज भी अपने भीतर 300 सालों के फ्रांसीसी प्रभाव को समेटे हुए है. 2006 में इसका आधिकारिक रूप से नाम बदलकर 'पुडुचेरी' कर दिया गया, जिसका स्थानीय तमिल भाषा में अर्थ होता है 'नया गांव'. यह शहर न केवल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है, बल्कि आध्यात्मिक और धार्मिक रूप से भी बहुत गहरा महत्व रखता है.

विशेष **मुख्यमंत्री पद के लिए कम से कम एक बार और शिवकुमार जोर लगाएंगे.**

दो सीटों के उपचुनाव पर नजर

बेंगलुरु. कर्नाटक में सत्ता परिवर्तन की चर्चा थम गई है. ऐसा लग रहा है कि डीके शिवकुमार के लोगों ने भी स्वीकार कर लिया है कि सिद्धारमैया ही 2028 में होने वाले चुनाव तक मुख्यमंत्री रहेंगे. वैसे भी अब दो साल का कार्यकाल बचा है.

दूसरी ओर सिद्धारमैया समर्थक भी शिवकुमार को प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाने की मांग नहीं कर रहे हैं. लेकिन ऐसा लग रह है कि यह तूफान से पहले की खामोशी है. मुख्यमंत्री पद के लिए कम से कम एक बार और शिवकुमार जोर लगाएंगे. जानकार सूत्रों का कहना है कि असम के चुनाव नतीजे अगर कांग्रेस के अनुकूल आते हैं तो वहां पार्टी को चुनाव लड़वा रहे डीके शिवकुमार का कद बढ़ेगा और वे मुख्यमंत्री पद के लिए जोर लगाएंगे.

इसी तरह यह भी कहा जा रहा है कि अगर कर्नाटक में दो सीटों पर हो रहे उपचुनाव में कांग्रेस नहीं जीतती है तब भी डीके शिवकुमार समर्थकों को मौका मिलेगा और वे मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को हटाने की मांग करेंगे.

गौरतलब है कि कर्नाटक की दो विधानसभा सीटों दावेनगेर दक्षिण और बागलकोट सीट पर उपचुनाव हो रहा है. दोनों सीटें कांग्रेस की हैं.

बिहार में नीतीश राज खत्म!

कौन बनेगा सीएम? मुख्यमंत्री की रेस में हैं तीन नाम

पटना. बिहार की सियासत में सोमवार का सूरज एक बड़े बदलाव की आहट लेकर आया. दशकों तक बिहार की राजनीति के धुरी रहे नीतीश कुमार अब पटना से दिल्ली की ओर रुख कर रहे हैं. मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को विधान परिषद की सदस्यता से अपना इस्तीफा सौंप दिया है.

दरअसल, वे 16 मार्च को ही राज्यसभा के लिए निर्विरोध निर्वाचित हुए थे और 10 अप्रैल से उनका कार्यकाल शुरू होने वाला है. जैसे ही नीतीश ने इस्तीफा दिया, पूरे सूबे में एक ही चर्चा आम हो गई है- अब बिहार का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा? यह सवाल केवल राजनीतिक गलियारों तक सीमित नहीं है, बल्कि बिहार का हर नागरिक अब अपने भविष्य और नई सरकार की नीतियों को लेकर उत्सुक है.

बिहार में इस बार पहली बार भाजपा का अपना मुख्यमंत्री बनने की प्रबल संभावना जताई जा रही है. इस रेस में सबसे पहला और मजबूत नाम सम्राट चौधरी का उभरकर सामने आ रहा है. वर्तमान में बिहार के उपमुख्यमंत्री और भाजपा विधायक दल के नेता सम्राट चौधरी कुशवाहा समाज के एक बड़े चेहरे माने जाते हैं.

विशेषज्ञों का मानना है कि उन्हें सीएम बनाकर भाजपा एक बड़ा 'जाति कार्ड' खेल सकती है. चूंकि बिहार में यादव और कुर्मी समुदाय से मुख्यमंत्री रह चुके हैं, ऐसे में 4.27 प्रतिशत से अधिक आबादी वाले कुशवाहा समुदाय को साधने के लिए सम्राट चौधरी सबसे उपयुक्त चेहरा हो सकते हैं. इसका असर न केवल बिहार, बल्कि पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश के आगामी चुनावों पर भी पड़ सकता है, जहाँ इस बिरादरी की अच्छी-खासी संख्या है.

शाह के करीबी नित्यानंद भी चर्चा में

मुख्यमंत्री की दौड़ में एक और बड़ा नाम केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय का है. उन्हें केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का बेहद करीबी माना जाता है और उनकी बिहार की राजनीति पर गहरी पकड़ है. नित्यानंद राय यादव समुदाय से आते हैं, जो पारंपरिक रूप से राजद का कोर वोटर माना जाता रहा है. भाजपा नेतृत्व यह सोच सकता है कि यदि नित्यानंद राय को कमान सौंपी जाती है, तो विपक्ष के मजबूत वोट बैंक में सेंध लगाना आसान होगा. एनडीए के घटक दल भी किसी 'पिछड़े चेहरे' को ही मुख्यमंत्री बनाने के पक्ष में नजर आ रहे हैं. ऐसे में नित्यानंद राय का अनुभव और समीकरणों को साधने की उनकी कला उन्हें इस रेस में काफी आगे खड़ा करती है.